लखनऊ शिखर सम्मलेन 2025

साहित्य एवं पर्यावरण अध्ययन पर्यान्वीक्षण संस्थान (EFSLE)

एवम्

नेशनल पीजी कॉलेज, लखनऊ

के संयुक्त तत्वाधान में

तीन-दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मलेन

का आयोजन किया जाना है

जलवायु परिवर्तन और भू-राजनीति

(प्रवर्धित पारिस्थितिकीय विकारों की उत्पत्ति एवम् विस्तारण)

दिनांक: दिसंबर 19-21, 2025

समय: 10 पूर्वा. - 5 अप.

स्थान: नेशनल पीजी कॉलेज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

पंजीयन अथवा अन्य जानकारी हेतु क्यू.आर. कोड को स्कैन करें या नीचे दिए लिंक पर जाएं:

https://www.efsle.org/lucknow-summit-2025/

The Lucknow Summit 2025

Scan for the Registration

ईएफएसएलई के बारे में:

ईएफएसएलई (Ecosophical Foundation for the Study of Literature and Environment- **साहित्य एवं पर्यावरण अध्ययन पर्यान्वीक्षण संस्थान**) बुद्धिजीवियों, शिक्षाविदों, पर्यावरण कार्यकर्ताओं, प्रकृति प्रेमियों और इन मुद्दों से जुड़े लोगों के बीच रचनात्मक बातचीत के लिए एक अंतरराष्ट्रीय खुले अकादमिक मंच के रूप में जाना जाता है। इसका उद्देश्य दो प्रासंगिक मुद्दों जेंडर और मानवाधिकार को साहित्य और पर्यावरण के साथ जोड़ना है, जिसे मुख्य रूप से ऋषिकेश कुमार सिंह द्वारा शुरू किया गया था, जो LEGH Movement (एल.ई.जी.एच. मूवमेंट- साहित्य, पर्यावरण, जेंडर और मानवाधिकार आंदोलन) के नाम से ज्ञात है। यह अपनी तरह का पहला उद्यम है जिसमें सभी चार मुद्दों को एक साथ जोड़ा गया है। यह विशेषता इस आंदोलन को प्रासंगिक बनाती है।

नेशनल पीजी कॉलेज, लखनऊ के बारे में:

1974 में स्थापित, राष्ट्रीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय (National P.G. College), उत्तर प्रदेश के लखनऊ शहर के केंद्र में गोमती नदी के तट पर स्थित है। इस महाविद्यालय का परिसर हरियाली से परिपूर्ण है जो कई प्रमुख शैक्षणिक और प्रशासनिक संस्थानों से घिरा हुआ है। 16 विश्वविद्यालयों और 150 से अधिक डिग्री महाविद्यालयों के एक शहर में, यह एकमात्र ऐसा महाविद्यालय है जिसे सीपीई (कॉलेज विद पोटेंशियल फॉर एक्सीलेंस) और स्वायत्तता का उच्चतम दर्जा प्राप्त है। यह महाविद्यालय, कला और वाणिज्य संकायों में स्नातक एवम् स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम तथा विज्ञान और कंप्यूटर संकायों में स्नातक पाठ्यक्रम प्रदान करता है। यह महाविद्यालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा विशेष अनुदान के साथ स्थापित दीन दयाल उपाध्याय कौशल केंद्र के तहत कौशल विकास के लिए स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रम भी प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, सुसज्जित प्रयोगशालाएँ, कम्प्यूटरीकृत समृद्ध पुस्तकालय, ई-पुस्तकालय, डेटा विश्लेषण केंद्र और वातानुकूलित पठन कक्ष कुछ अत्याधुनिक बुनियादी शैक्षिक सुविधाएं हैं।

अवधारणा नोट:

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में वैश्विक राजनीति में बहुत बड़े बदलाव देखने को मिले जिसमें 'द्विध्रुवीय' दुनिया का 'एकध्रुवीय' होने के साथ ही सत्ता की राजनीति की शीत युद्ध युगीन परिभाषा और उसके कूटनीतिक, आर्थिक और सामरिक पहलुओं में हुए तमाम परिवर्तन भी काफी महत्वपूर्ण थे। ऐसे समय में दुनिया के भूगोल को जलवायु परिवर्तन के विभिन्न पारिस्थितिकीय आख्यानों के पूरे पारिस्थितिकी तंत्र सहित विभिन्न समुदायों के भीतर विकसित हो रहे ऐतिहासिक पूर्वानुमानों, साहित्यिक उत्थानों, सामाजिक-आर्थिक विकास और मनो-सांस्कृतिक प्रथाओं को आकार देना था। इस संदर्भ में, 'भू-राजनीति' सबसे उपयुक्त शब्द साबित हुआ जो एक साथ कई चीजों का आह्वान करता है। 'राजनीतिक संघर्ष और प्रभुत्व' इस शब्द का सबसे स्पष्ट अर्थ है जो इसके वैश्विक विस्तार को निहित रूप से दर्शाता है। यह संघर्ष वास्तव में प्राकृतिक संसाधनों की बढ़ती मांग, जीवाश्म ईंधन की खपत और नए कृषि अवसरों का परिणाम है। विशेष रूप से, अंतर्राष्ट्रीय जलवायु नीति और जलवायु संवर्धन से सम्बद्द क्रियाकलापों का उल्लेख करते हुए ही 'जलवायु परिवर्तन' और 'भू-राजनीति' दोनों शब्दों के बीच के परस्पर सौहार्द को बेहतर ढंग से चित्रित और पुनरावलोकित किया जा सकता है।

पिछले दो दशकों में बाढ़, सूखा, भू-स्खलन, हिमखंडों के पिघलने और समुद्र के जल स्तर के बढ़ने, गर्म हवाओं में हो रही वृद्धि, तूफान और बवंडर, बढ़ते तापमान और जंगल की आग के कारण जीवन की हानि, तटीय कटाव और विस्थापन, पारिस्थितिकी तंत्र में घातक परिवर्तन, पानी की कमी और इस तरह के कई पारिस्थितिकीय असंतुलन के रूप में जलवायु परिवर्तन एक बेहद खतरनाक दर के साथ पृथ्वी पर जीवन के लिए एक घातक संकेत है। हाल के सर्वेक्षण के अनुसार, 2023 अब तक का सबसे गर्म वर्ष साबित हुआ। जलवायु प्रणाली के साथ मनुष्यों के बढ़ते अनावश्यक और खतरनाक हस्तक्षेप और अतिक्रमण के कारण पृथ्वी के क्षरित होते पारिस्थितिकी तंत्र को पुनःपूरित करने, पुनर्जीवित करने एवम् पुनः सक्रिय (3R) बनाने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाने की आवश्यकता है। इन्हीं प्रयासों के तहत, ब्राजील के रियो डी जनेरियो में 1992 में अपनाए गए जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) के तहत एक बड़ी पहल की गई। क्योटो प्रोटोकॉल (1997), कार्टाजेना (2000) और नागोया प्रोटोकॉल (2010) और पेरिस समझौता (2015) इन्हीं प्रयासों की कुछ महत्वपूर्ण कड़ियाँ थीं। हालाँकि, वैश्विक उत्सर्जन में अभी तक कुछ ख़ास कमी

नहीं आई है, बल्कि इसमें तेजी से वृद्धि ही हुई है। वास्तव में, वैश्विक समन्वय ही जलवायु मुद्दे का एकमात्र उचित, स्पष्ट और व्यवहारिक समाधान है जो कि सीमा-विवादों के बिना, सत्ता की राजनीति के बिना और संसाधनों की खोज की होड़ में शामिल हुए बिना ही हासिल किया जा सकता है।

तीसरे ईएफएसएलई अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (लखनऊ शिखर सम्मेलन 2025) का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मेदार स्थायी भू-राजनीतिक स्तर के प्रभावों की जांच करना और इसके संभावित समाधानों का पता लगाना है। एक बहु-विषयक और अंतर्विषयक सम्मेलन होने के नाते, सभी धाराओं के मूल शोध पत्रों को ऐसे गंभीर मुद्दों पर चर्चा करने के लिए आमंत्रित किया जाता है जो बड़े पैमाने पर एक-दूसरे से सम्बद्ध हों और विशेष रूप से निम्नलिखित उप-विषयों पर केन्द्रित हों (लेकिन इन तक सीमित नहीं):

उप-विषय:

- मानव युग (एंथ्रोपोसिन) में भू-राजनीतिः एक अभिशाप
- भू-राजनीति, भूमंडलीकरण और पर्यावरणीय संकट
- जलवायु परिवर्तन और राजनीतिक भूगोल की प्रकृति पर पुनर्विचार
- साहित्यिक मानचित्रणः संज्ञानात्मक मानचित्रण, स्थानिकता और वास्तुकलात्मक आख्यायिकाएँ
- विश्व साहित्य और जलवायु परिवर्तन
- पारिस्थितिकीय आख्यायिकाएँ, स्वदेशीता और जलवायु परिवर्तन
- जलवायु-गल्प (क्लाई-फाई), प्राकृतिक परिदृश्य और पर्यावरणीय संकट
- पर्यावरणीय-काव्य, पर्यावरणीय-नाट्यकला और जलवायु परिवर्तन-रंगमंच एवम् आलोचना
- पर्यावरणीय-शिक्षाशास्त्र, पर्यावरणीय-नैतिकता और पर्यावरण संरक्षण
- जलवायु ज्यामिति और भू-अभियांत्रिकी
- पर्यावरण संरक्षण के सामाजिक-मनोवैज्ञानिक पहलु
- जलवायु परिवर्तन और सामाजिक प्रतिक्रियाएं: एक सामाजिक परिप्रेक्ष्य
- जलवायु परिवर्तन और संसाधनों की कमी, विस्थापन और संघर्ष
- जलवायु क्रियाकलाप, सतत विकास और विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड)
- वैश्विक राजनीति और जलवायु परिवर्तन की समीक्षा
- भारतीय ज्ञान परम्परा में जलवायु परिवर्तन संबंधी परिचर्चा एवम् पुनरावलोकन
- संगीत शास्त्र, नृजातीय-संगीत शास्त्र, लोक संगीत और पर्यावरणीय-संगीत शास्त्र: जलवायु परिवर्तन की दिशा में एक विशिष्ट संवाद
- जलवायु-संरक्षित कृषि और कृषि-वानिकी
- पुनरुत्पादित कृषि: स्वदेशी ज्ञान युक्त प्रकृति-आधृत समाधान
- नियंत्रित पर्यावरण कृषि (सीईए), कृषि-पारिस्थितिकी और सौर-खेती

महत्वपूर्ण तिथियाँ:

- पंजीकरण प्रारंभ होने की तिथि: 25 जून 2025
- संक्षिप्त प्रपत्र (Abstract) जमा करने की अंतिम तिथि: 15 अगस्त 2025
- स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना देने की तिथि: 01 सितम्बर 2025

- पूर्ण शोधपत्र जमा करने की अंतिम तिथि: 15 अक्टूबर 2025
- शोधपत्र स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना देने की तिथि: 25 अक्टूबर 2025

टिप्पणी:

- पांच (5) कुंजीशब्दों सहित 300 शब्दों के संक्षिप्त प्रपत्र को md@efsle.org पर मेल किया जाना चाहिए।
- ईमेल के 'विषय'(Subject) में 'लखनऊ शिखर सम्मलेन 2025' लिखें।
- संक्षिप्त प्रपत्र गूगल फॉर्म के माध्यम से भी नीचे दिए गए वेब लिंक के द्वारा जमा किए जा सकते हैं:

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSdpG-H62d0I_ZVppZJaHbqyvzs6x_tFQ6hIomtrvvW4gR_8GA/viewform?usp=header

- शोधपत्र देवनागिरी लिपि में टाइम्स न्यू रोमन (12 पॉइंट) में होने चाहिए और फुटनोट का प्रयोग नहीं होना चाहिए।
- पूर्ण शोधपत्र की शब्द सीमा 4000-6000 शब्दों के बीच होनी चाहिए
- संदर्भ हेतु एम एल ए स्टाइल शीट (MLA Style Sheet) की नवीनतम संस्करण का ही उपयोग करें।
- अंतरिम रूप से चुने गए शोधपत्रों को आईएसबीएन संख्या (ISBN No.) वाले एक संपादित पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा न कि सम्मलेन के शोधपत्रों के संकलन के रूप में।
- शोधार्थियों द्वारा संक्षिप्त जीवन-वृत्त (100 शब्दों में) संलग्न किया जाना चाहिए।

पंजीकरण की विभिन्न श्रेणियां:

विवरण	पूर्वकालिक पंजीकरण (15 सितम्बर से पहले)		विलंबित पंजीकरण/ तात्कालिक पंजीकरण (15 सितम्बर के बाद)	
	आवास-सुविधा के बिना	आवास-सुविधा के साथ	आवास-सुविधा के बिना	आवास-सुविधा के साथ
संकाय सदस्य/पेशेवर व्यक्ति/ स्वतंत्र शोधार्थी	रु. 3000	रु. 7000	रु. 4000	रु. 8000
शोधार्थी (Phd/MPhil)	रु. 2000	रु. 5000	रु. 3000	रु. 7000
पीजी छात्र/छात्राएं	रु. 1000	रु. 3000	रु. 1500	रु. 4500
विदेशी नागरिक	$ 100	$ 350	$ 150	$ 450
ईएफएसएलई के आजीवन सदस्य	कोई शुल्क नहीं	रु. 4000	कोई शुल्क नहीं	रु. 6000
प्रतिभागी (शोधपत्र प्रस्तुत न करने वाले/ साथ आए व्यक्ति)	रु. 1000 $ 50	रु. 3000 $ 250	रु. 1500 $ 75	रु. 4500 $ 350

(*पंजीकरण शुल्क में सम्मलेन सामग्री, सभी तीन दिनों का नाश्ता और भोजन और संक्षिप्त शोधपत्र पुस्तिका – Abstract Book शामिल होंगे।)

आयोजन समिति:

संरक्षक: प्रो. (डॉ.) देवेंद्र कुमार सिंह, प्राचार्य, नेशनल पीजी कॉलेज, लखनऊ

संयोजक: प्रो. (डॉ.) सिद्धार्थ सिंह, अंग्रेजी विभाग, श्री जेएनएमपीजी कॉलेज, लखनऊ, क्षेत्रीय सचिव- उत्तर-पूर्वी क्षेत्र, ईएफएसएलई, मोबाइलः 00-91-8423604010

आयोजन सचिव: प्रो. (डॉ.) पी. के. सिंह, विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग और पीजीडीआरएस, एनपीजीसी, लखनऊ, मुख्य समन्वयक, उत्तर प्रदेश मध्य-दक्षिणी परिषद्, ईएफएसएलई, मोबाइलः 00-91-9839930999

सह-संयोजक:

- डॉ. ऋषिकेश कुमार सिंह, अध्यक्ष, ईएफएसएलई, नई दिल्ली मोबाइलः 00-91-9205037771
- डॉ. किरण भैरनवर, एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय तथा सचिव, ईएफएसएलई, मोबाइलः 00-91-8800411949

समन्वयक:

- प्रो. ज्योति भार्गव, वाणिज्य संकाय, एनपीजीसी, लखनऊ
- डॉ. रितु जैन, भूगोल विभाग, एनपीजीसी, लखनऊ
- डॉ. हुमा याकूब, अंग्रेजी विभाग, मौ. आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, लखनऊ
- डॉ. अनुपम सिंह, संस्कृत विभाग, महिला विद्यालय डिग्री कॉलेज, लखनऊ

आयोजन समिति सदस्य:

- डॉ. आशा तिवारी, संस्कृत विभाग, भारती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
- डॉ. बीनू सिंह, अंग्रेजी विभाग, एनपीजीसी, लखनऊ
- श्री ब्रजेश कुमार, कार्यकारी परिषद् सदस्य, ईएफएसएलई, नई दिल्ली
- डॉ. भारती राय, अंग्रेजी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय
- डॉ. राज गौरव वर्मा, अंग्रेजी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय
- डॉ. साइमा मेंहदी, अंग्रेजी विभाग, शिया कॉलेज, लखनऊ
- डॉ. नेहाश्री श्रीवास्तव, मनोविज्ञान विभाग, एनपीजीसी, लखनऊ
- श्री सुरेंद्र मणि त्रिपाठी, राजनीति विज्ञान विभाग, एनपीजीसी, लखनऊ
- श्रीमती विजयालक्ष्मी, कोषाध्यक्ष, ईएफएसएलई, नई दिल्ली

- डॉ. विकास सिंह, रसायन विज्ञान विभाग, एनपीजीसी, लखनऊ
- डॉ. सुगंधा श्रीवास्तव, अंग्रेजी विभाग, एनपीजीसी, लखनऊ
- सुश्री गरिमा महारा, पीएचडी शोधार्थी, अंग्रेजी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय
- श्री आशुतोष राजपूत, पीएचडी शोधार्थी, भूगोल विभाग, एनपीजीसी, लखनऊ
- श्री रितांशु तिवारी, पीएचडी शोधार्थी, भूगोल विभाग, जेएमपीजीसी, औरैया
- सुश्री मृणाल पंत, पीएचडी शोधार्थी, अंग्रेजी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

रसद समिति (Logistics):

- डॉ. नीरज आर्य, प्रबंधन संकाय, एनपीजीसी, लखनऊ
- श्री संतोष कुमार यादव, अर्थशास्त्र विभाग, एनपीजीसी, लखनऊ
- श्री कुमार पार्थ, कार्यक्रम समन्वयक, ईएफएसएलई, नई दिल्ली
- श्री कुलदीप, नेशनल पीजी कॉलेज, लखनऊ

पंजीयन शुल्क के भुगतान हेतु क्यू.आर. कोड को स्कैन करें:

ईएफएसएलई के बैंक खाते के विवरण हेतु लिंक पर क्लिक करें:

https://www.efsle.org/efsle-account-detail/

विस्तृत जानकारी हेतु इस लिंक पर जाएं:

https://www.efsle.org/lucknow-summit-2025/